Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR, 2022, VOL- 9/70
doi.org/10.21922/srjis.v9i70.10083

शिक्षकों की अभिवृत्ति का विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन

प्रतिभा गुप्ता[1] & उदय सिंह[2], Ph. D.

[1]Research Scholar, Education Department, D. D. U. Gkp. Uni. Gorakhpur (U. P.)

[2]Professor Uday Singh, Department of Education D. D. U. Gkp. Uni. Gorakhpur (U.P)

Paper Received On: 25 APR 2022

Peer Reviewed On: 30 APR 2022

Published On: 1 MAY 2022

Abstract

प्राचीन काल से लेकर आज तक शिक्षक को समाज के आदर्श शिव्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है शिक्षक ही किसी विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक भाक्ति है। शिश्य के मन में सीखने की इच्छा को जो जागृत कर पाते है वे ही शिक्षक कहलाते हैं, शिक्षक के द्वारा व्यक्ति के भविश्य को बनाया जाता है एवं शिक्षक ही वह सुधार लाने वाला व्यक्ति होता है विद्यार्थियों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। शैक्षणिक, क्रियाकलाप की सफलता मुख्य रूप से शिक्षक के अभिवृत्ति, योग्यता एवं उसके कार्य पर निर्भर करती है शिक्षक की अभिवृत्ति जैसी होगा विद्यार्थियों का विकास भी वैसा ही होगा। शिक्षक की सकारात्मक अभिवृत्ति न केवल कार्य को आसान बनाती है, अपितु विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव भी डालती है, जिससे विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शिक्षक की नकारात्मक अभिवृत्ति बच्चे में उसी प्रकार की सोच का निर्माण करना सिखाती है। शिक्षकों की विद्यार्थियों के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति से बच्चों में मानसिक तनाव एवं अलगाव की भावना विकसित हो जाती है जो बच्चे के शैक्षिक उपलब्धि पर बुरा प्रभाव डालती है कुछ केसेज में विद्यार्थियों में चिंता की इतनी प्रबल भावना विकसित हो जाती है जो भारीरिक दोश जैसे मांसपेशियों में ऐठन एवं गर्दन मे तनाव उत्पन्न करती है।

कुंजी भाब्द : *1. शिक्षको की अभिवृत्ति 2. विद्यार्थियों का शैक्षिक विकास*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :– शिक्षक एक ऐसा प्राणी है जिसके चारो तरफ सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया चक्कर लगाती है भारतीय समाज में शिक्षक का स्थान सर्वश्रेश्ठ है, शिक्षक वह कड़ी है जो बैद्धिक, परम्परा एवं तकनीक कौशल को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करता है। विद्यार्थियों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का कार्य शिक्षक करता है। शैक्षणिक क्रियाकलाप की सफलता मुख्य रूप से शिक्षक के व्यवहार (अभिवृत्ति), योग्यता एवं उसके कार्य पर निर्भर करती है, शिक्षक की अभिवृत्ति जैसी होगी उसी प्रकार से विद्यार्थियों का विकास भी होगा क्योंकि विद्यार्थियों पर सबसे ज्यादा प्रभाव शिक्षक की अभिवृत्ति का पड़ता है **(कुमार, 2020)**।

अभिवृत्तियां किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण पक्ष होती है, अभिवृत्ति मनोसामाजिक प्रत्यय है जो विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति द्वारा किये गये व्यवहार की प्रवृत्ति को दर्शाता है। अभिवृत्ति

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

व्यक्ति का वह गुण होता है जो व्यक्ति की पसंद एवं नापसंद को दर्शाता है, अभिवृत्ति से आ ाय व्यक्ति के उस दृश्टिकोण से होता है जिसके कारण वह किसी व्यक्ति, वस्तु इत्यादि के प्रति वि ोश प्रकार का व्यवहार करता है। विभिन्न वस्तु, व्यक्ति, संस्था, स्थिति, क्रियाकलाप आदि के प्रति किसी विशेश व्यक्ति के विचार एवं पूर्व धारणाएं ही उस व्यक्ति की अभिवृत्तियों का निर्धारण करते हैं, किसी व्यक्ति की अभिवृत्ति का ज्ञान होने से हम उस व्यक्ति के विचार का आंकलन एवं वि लेशण कर सकते है। **(गुप्ता, 2004)** अभिवृत्ति की प्रकृति मुख्यतः तीन प्रकार की होती है – धनात्मक अभिवृत्ति, ऋणात्मक अभिवृत्ति एवं भाून्य अभिवृत्ति। किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति सकारात्मक दृश्टिकोण धनात्मक अभिवृत्ति कहलाती है, किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति नकारात्मक दृश्टिकोण ऋणात्मक अभिवृत्ति कहलाती है, एवं किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति न तो सकारात्मक दृश्टिकोण का होना और न ही नकारात्मक दृश्टिकोण होना भाून्य अभिवृत्ति कहलाती है। अभिवृत्ति सदैव परिवर्तनशील होती है। अभिवृत्ति किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या विचार के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल भावना का प्रदर्शन करती है **(बंदे, 2020)**। सामान्यता अभिवृत्तियां स्वयं के अनुभव तथा दूसरों के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से सीखी जाती हैं। आधिगम के साथ–साथ कुछ आनुवंशिक कारक भी अभिवृत्तियों को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। अभिवृत्तियों का अधिगम साहचर्य के द्वारा भी होता है। अक्सर विद्यार्थी शिक्षक के कारण किसी विशय वि ोश के प्रति रूचि विकसित कर लेते है क्यो कि उन्हे शिक्षको में सकारात्मक गुण देखने को मिलता है यही सकारात्मक गुण उस विशय के साथ जुड़ जाता है जिसे शिक्षक पढ़ाता है, जो उस विशय के प्रति रूचि के रूप में अभिव्यक्त होता है। यदि एक विशिश्ट अभिवृत्ति को प्रदर्शित करने के लिए किसी व्यक्ति की प्रशंसा की जाती है तो यह सम्भावना बढ़ जाती है कि वह आगे चलकर उस अभिवृत्ति को विकसित करेगा। यह जरूरी नही कि हम मात्र साहचर्य, पुरस्कार, एवं दण्ड के द्वारा ही अभिवृत्तियों का अधिगम करते है बल्कि हम दूसरों को अभिवृत्ति विशय के प्रति एक विशिश्ट प्रकार का विचार व्यक्त करने या व्यवहार प्रदर्शित करने के लिए पुरस्कृत या दण्डित होते देखकर इनका अधिगम करते है। जैसा कि बच्चों को उनके अभिभावक द्वारा बड़ो के प्रति आदर प्रदर्शित करते देखकर बच्चे बड़ो के प्रति श्रद्धालु अभिवृत्ति विकसित कर सकते है। विशेश रूप से अभिभावक एवं परिवार के अन्य सदस्यो द्वारा सबसे पहले बच्चे की अभिवृत्ति का निर्माण होता है। बच्चे की अभिवृत्ति निर्माण में माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, बाद में विद्यालय बच्चे की अभिवृत्ति निर्माण में सहायक होते है। परिवार एवं स्कूल में अभिवृत्तियों का अधिगम साहचर्य, पुरस्कार एवं दण्ड के द्वारा होता है, एवं कुछ अभिवृत्तियों का निर्माण स्वंय के अधिगम द्वारा भी होता है।

अभिवृत्ति निर्माण के दौरान और इसके बाद भी विभिन्न प्रकार के प्रभावो द्वारा अभिवृत्तियों मे परिवर्तन एवं परिमार्जन किया जा सकता है। कुछ अभिवृत्तियां अन्य की तुलना में अधिक परिवर्तित होती

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है। उन अभिवृत्तियों की तुलना में जो मजबूती से स्थापित हो चुकी होती हैं, और व्यक्ति के मूल्यों का अंग बन चुकी होती है ऐसी अभिवृत्तियों में परिवर्तन की संभावना अधिक रहती है जो निर्माण के क्रम में है और काफी हद तक मत के रूप में है **(एन0सी0ई0आर0टी0, 2018)**। संज्ञानात्मक अवयव अभिवृत्ति के वैचारिक एवं चिन्तन पक्ष से जुड़े होते है व्यक्ति अपने जगत को संज्ञानात्मक श्रेणीयों के समुच्चय के रूप में व्यवस्थित करता है अर्थात विभिन्न सामाजिक वस्तुओ का श्रेणीयन करता है, श्रेणीयन प्राप्त सुचनायें विशिश्ट धारणायें एवं विश्वासों के आधार पर निर्मित की जाती है जैसे– वे सभी संस्थाऐं जहाँ किसी न किसी प्रकार का ज्ञान औपचारिक ढंग से दिया जाता है उन्हे शैक्षणिक संस्थान की श्रेणी में रखा जाता है। अभिवृत्ति के भावात्मक अवयव से तात्पर्य होता है कि हम वस्तु के प्रति कैसा अनुभव करते है। हमारे मूल्य संवेग एवं अनुभव सम्मिलित रूप से अभिवृत्ति वस्तु को धनात्मक या निशेधात्मक रूप से मूल्यांकन करने हेतु प्रेरित करते है। बहुत से मनोवैज्ञानिक भावात्मक अवयवों को अभिवृत्ति के सन्दर्भ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते है। व्यवहारात्मक अवयव व्यक्ति के व्यवहार से सम्बन्धित होता है। व्यक्ति किसी सामाजिक उद्दीपक के प्रति विशेश ढंग से व्यवहार करने की तत्परता या प्रवृत्ति प्रद र्शित करता है जिससे उस व्यक्ति के विश्वास एवं भाव प्रतिबिम्बित होते है। यदि व्यक्ति किसी शैक्षणिक संस्थान के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति रखता है तो उस संस्थान के साथ स्वंय सम्बद्ध होकर उसके शैक्षणिक क्रियाकलापों में सृजनात्मक रूप से भाग लेगा एवं ऐसा करने के लिए दूसरो को भी प्रोत्साहित करेगा। किसी वस्तु के प्रति अभिवृत्ति निर्माण में ये तीनो ही अवयव एक साथ सम्बद्ध होकर अभिवृत्ति के स्वरूप को निर्धारित करते है **(त्रिपाठी, 2019)**। शिक्षको की अभिवृत्ति का प्रभाव वि ोश रूप से बच्चे पर पड़ता है क्योकि बच्चो का ज्यादातर समय विद्यालय में शिक्षको के साथ व्यतीत होता है। किसी व्यक्ति की सकारात्मक अभिवृत्ति, उस व्यक्ति के प्रति आकर्शित करती है जब कि किसी व्यक्ति की नकारात्मक अभिवृत्ति उस व्यक्ति के प्रति अनाकर्शित करती है और उस व्यक्ति से दूर हो जाती है। शिक्षक बच्चों के लिए रोल माडल होते हैं, अगर किसी शिक्षक की अभिवृत्ति बच्चे के प्रति नकारात्मक है तो बच्चा उस शिक्षक से दूर भागेगा, और बच्चे का ध्यान पढ़ाई में कम शिक्षक के अभिवृत्ति पर ज्यादा रहेगा। एक शिक्षक के लिए अभिवृत्ति का ज्ञान बहुत आव यक है क्योंकि शिक्षक की अभिवृत्ति जैसी होगी वैसा ही प्रभाव बच्चे पर पड़ेगा। शिक्षक की बच्चे के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति बच्चे को पढ़ने के लिए प्रेरित करेगी, जिससे बच्चे का शैक्षिक विकास होगा इससे यह स्पश्ट होता है कि शिक्षक की अभिवृत्ति बच्चे के लिए उद्दीपक का कार्य करेगी **(करीम, 2019)**। जब शिक्षक बच्चे को उत्साह के साथ पढाता है तो छात्र शिक्षक की तरफ आकर्शित होते है जिससे बच्चे के सीखने में वृद्धि होती है। एक शिक्षक को छात्रो के साथ आकर्शक एवं महत्वकांक्षी तरीके से बात करने की आदत होनी चाहिए। शिक्षक को शिक्षण संस्थान के दरवाजे तक पहुंचने के बाद अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को भूल जाना चाहिए। हर किसी

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

की व्यक्तिगत समस्याये होती है जिसे संभालना मुश्किल होता है लेकिन यह आव यक है कि स्वयं की समस्याएं शिक्षण कार्य में हस्तक्षेप न करे, ऐसा करने से सकारात्मकता आयेगी। शिक्षक का व्यवहार छात्रो के साथ निश्पक्ष एवं सम्मानित होना आवश्यक है शिक्षक को मनोरंजन के साथ छात्रो को पढ़ाना चाहिए जिससे की छात्र उबे नही। **(म्यूसेला, 2011)** शिक्षा वह गतिविधि है जो नई पीढ़ियों को आव यक जानकारी प्राप्त करने में सहायता करती है, इसमें व्यक्ति अपनी क्षमता अनुसार प्रतिभा विकसित करता है। शिक्षा एवं शिक्षण विधियों में सबसे महत्वपूर्ण कारक शिक्षक है जो छात्रो को संज्ञानात्मक लक्ष्य तक पहुचने में सक्षम बनाता है। परिवार के बाद स्कूल बच्चे की पहली बुनियादी समाजीकरण संस्था है, अभिभावक के बाद शिक्षक ही है जो बच्चे के व्यक्तित्व विकास में सहायक है। आधुनिक शिक्षा न तो केवल बच्चे के बौद्धिक विकास में सहायक है बल्कि चारित्र विकास, कर्तव्य, जिम्मेदारी पूरी तरह शिक्षक के कंधो पर है। इस उत्तरदायित्व की पूर्ति शिक्षक के स्वंय के स्वस्थ्य व्यक्तिव मूल्यों के विकास के साथ–साथ उनके सम्बन्धो में दक्षता प्रदान करने से ही सम्भव है। एक अच्छा शिक्षक बनने के लिए आव यक योग्यताएं एव विशेशताएं वही कारक है जो एक अच्छी शिक्षा को परिभा त करते है। एक अच्छे शिक्षक में निम्न बुनियादी विशेशताएं होती है– शिक्षण सामग्री का ज्ञान, निर्णय लेना, समस्या सुलझाने की क्षमता, आत्म समझ, आत्म सुधार, प्रतिबिम्बित करना, छात्रो को पहचानना एवं छात्रो के सीखने की जरूरतो को जानना, शिक्षा में नई खोजो को लागू करना, शिक्षण एवं संचार क्षमता। शिक्षको का छात्रो के साथ संचार में सकारात्मक एवं नकारात्मक जो भी दृश्टिकोण होता है वह बच्चे के जीवन के आकार को निर्देशित करता है। शिक्षक अपने स्वयं के व्यवहार एवं दृश्टिकोण के माध्यम से छात्रो के लिए आदर्श बन जाते है। छात्र के प्रेरणा स्तर पर सकारात्मक शिक्षण व्यवहार के प्रभाव से सम्बन्धित फ्राइमियर, 1993 के अध्ययन में लेखक ने शिक्षको के कुछ व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित किया है जैसे –छात्र कार्यो के लिए प्रतिक्रिया देना, प्रशंसा करना, छात्रो की बात सुनना और दिलचस्पी लेना। अध्ययन के परिणामो से यह पता चला है कि अशाब्दिक क्रियाये जैसे– मुस्कुराना, चेहरे के हाव–भाव, छात्रो के सीखने के अनुभव को बेहतर बनाने में पहले आता है, जबकि कक्षा का विशय दूसरे स्थान पर आता है। छात्र जो भी प्रदर्शन करता है वह पूर्ण रूप से उसके कार्यो का परिणाम नही होता छात्रो का प्रदर्शन कई कारणो से प्रभावित होता है जिसमें सबसे पहले स्थान पर शिक्षकों की अभिवृत्ति है। म्यूसेला ने अपने भोध में पाया कि शिक्षको की विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का छात्रो के प्रदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है एवं शिक्षको की विद्यार्थियों के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति का विद्यार्थियों के प्रदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जिससे विद्यार्थियों का शैक्षिक विकास बाधित होता है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इरबिन हाइमन उदृत, **मोरोक्वीन (2018)** के अनुसार शिक्षकों की नकारात्मक अभिवृत्ति से पोस्ट ट्रामेटिक डिसआर्डर के समान तनाव बढ़ सकता है एवं अलगाव की भावना भी बढ़ सकती है। कुछ केसेस में शिक्षकों की नकारात्मक अभिवृत्ति से विद्यार्थियों में चिंता की भावना इतनी प्रबल हो जाती है कि शारीरिक दोश जैसे– ऊर्जा की कमी, मांसपशियों में ऐंठन, एवं गर्दन में तनाव उत्पन्न करती है। तनाव से सम्बन्धित इस तरह की बिमारियां छात्रों को न केवल शारीरिक नुकसान पहुंचाते है बल्कि छात्रों द्वारा कक्षा में ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता भी बाधित करते हैं।

निश्कर्श :– शिक्षक के लिए सबसे पहली जरूरत है छात्र का समर्थन करना एवं छात्रो की सकारात्मक अपेक्षाओ को पूरा करना ताकि छात्रो को सीखने के लिए प्रेरित किया जा सके। शिक्षक का सकारात्मक व्यवहार छात्रो के साथ सकारात्मक सम्बन्ध बनाने की अनुमति देता है। शिक्षण प्रणाली में एक अच्छा शिक्षक होने की भार्त संचार प्रक्रिया को अच्छी तरह से जानना है। शिक्षक जो छात्रो की भावनाओं जैसे– रूचि, भय, चिन्ता को समझने की काशिश करता है, छात्रो की सामाजिक गतिविधियों का समर्थन करता है, सराहना करता है। उन्हे इन गतिविधियों के लिए स्वीकृति देता है और उनकी प्र ंसा करता है जो उन्हे मूल्यावान लगती है इससे छात्रो को महसूस होगा कि उनके बारे मे सोचा जा रहा है, उनकी मदद की जा रही है। अगर शिक्षक ने छात्रो के साथ सकारात्मक दृश्टिकोण एवं व्यवहार प्रदर्शित किया है तो छात्रो के चरित्र विकास एवं शैक्षिक विकास की सफलता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, लेकिन अगर शिक्षक ने छात्रो के साथ नकारात्मक दृश्टिकोण एवं व्यवहार प्रदर्शित किया है तो छात्रो के चरित्र विकास एवं भौक्षिक विकास की सफलता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। शिक्षक का महत्वपूर्ण पक्ष है प्रशंसा करना, यदि बच्चा आलोचना के साथ रहता है तो वह निंदा करना सीखता है और यदि प्रशंसा के साथ रहता है तो बच्चा अपनी क्षमता के साथ मेहनत करके आगे बढ़ता है।

उपरोक्त वर्णित कथन हमें बताता है कि किसी भी शिक्षक की सकारात्मक अभिवृत्ति विद्यार्थियों को अच्छा करने के लिए अभिप्रेरित करती है, जबकि शिक्षक की नकारात्मक अभिवृत्ति विद्यार्थियों को आगे बढ़ने से रोकती है।शिक्षकों का एटीट्यूट बच्चों के प्रति नकारात्मक नही होना चाहिए क्योंकि बच्चे के ऊपर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है जो बच्चे के शैक्षिक एवं मानसिक विकास को अवरूद्ध कर देता है। चूंकि बच्चे का सबसे ज्यादा समय शिक्षक के साथ ही व्यतीत होता है, शिक्षक बच्चे के रोल माडल होने के कारण भी बच्चे के ऊपर ज्यादा प्रभाव डालते हैं। इसलिए शिक्षको को चाहिए कि बच्चे के साथ उनका एटीट्यूड सकारात्मक हो जिससे बच्चे का शैक्षिक एवं मानसिक विकास बाधित न हो।

सन्दर्भ

उलुग, म्यूसेला (Dec. 2011) : Procedia social and behavioure sciences 30 (1) : 738-742. DOI: 10-1016/j.sbspro.2011.10.144 उदृत दिनांक 03.04.22

कुमार, अ ोक (2020) : विद्यालयी शिक्षा में शिक्षक की भूमिका इण्टरनेशनल जर्नल

ऑफ एडवांस्ड एजुकेशनल रिसर्च, वाल्यूम–5 इ यू–2,2020, पृ0सं0–23–26 उदृत दिनांक 6.4.22
गुप्ता, एस0पी0 (2004) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान भारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृ0सं0–438
नायक, प्रीति (2019) : हाऊ टीचर्स एटीट्यूट इफेक्ट स्टूडेन्ट हैपीनेस, https://www.linkedin.com/pulse/how-teachers-attitude-affects-students-happiness-priti-nayak, उदृत दिनांक 13.04.2022।
एन0सी0ई0आर0टी0 (2018) : मनोविज्ञान, क्लास–12, पब्लिशर्स – एन0सी0ई0आर0टी।
बंदे, (2020) : अभिवृत्ति का अर्थ, परिभाशा, प्रकार, विशेशताएं, अभिवृत्ति मापन की विधियाँ। https : // www . scotbuzz . org /2020 / 07/abhivritti : html?m=1 उदृत दिनांक 4.4.22
माजौजिक, करीम (2019) : इम्पैक्ट ऑफ टीचर्स पर्सनैलिटी एण्ड बिहैवियर ऑन स्टूडेन्टस एचीवमेन्ट , https://social science research. Org/index. Php/Gjhss/article/download/3026/2915, उदृत दिनांक15.04.2022
मोरोक्विन, बेथानी (2018) : द नेगेटिव एटीट्यूट आफ टिचर्स इम्पैक्ट आन स्टूडेंट्स। https://www.the classroom. Com/ negative-attitudes-teachers-8648637.html, उदृत दिनांक 31.03.2022
त्रिपाठी, लालबचन (2019) : आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान, एच0पी0भार्गव पब्लिकेशन, पृ0सं0– 183।
उलुग, म्यूसेला (Dec. 2011) : Procedia social and behavioure sciences 30 (1) : 738-742. DOI: 10-1016/j.sbspro.2011.10.144 उदृत दिनांक 03.04.22

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies